



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



जन-शिक्षण का बड़ा माध्यम है मीडिया : जयंत सिंह तोमर

वर्धा, 5 अगस्त 2025: 'प्रेस जन- शिक्षण के साथ जनमत निर्माण का माध्यम है। यही कारण है कि भारत में पत्रकारिता की शुरुआत के साथ ही उस पर अंकुश लगाने के निरंतर प्रयास हुए हैं। इसका एक लम्बा इतिहास है। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रेस की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रेस के लिए समय समय पर जो कड़े कानून लाये गये उसके कारण अनेक समाचार



पत्रों के संचालक व सम्पादकों को जीवन में अनेक कष्ट उठाने पड़े।'

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के विधि विभाग में विद्यार्थियों के बीच आमंत्रित- विद्वान जयन्त सिंह तोमर ने प्रेस - विधि पर केन्द्रित व्याख्यान में यह बात कही। दो दिन की व्याख्यान श्रृंखला क्रमशः भारत में प्रेस संबंधी कानून व भारतीय प्रेस परिषद पर केन्द्रित थी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विधि विभाग के अधिष्ठाता प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, वरिष्ठ अध्यापक आनन्द भारती, अध्यापिका डॉ. दिव्या शुक्ला, डॉ. परमानन्द राठौर, डॉ. अभिषेक सिंह, सुश्री पूर्वा जैन, शताक्षी दीक्षित, शील खांडेकर, पूजा फूलबांधे की उपस्थिति रही।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



जयंत सिंह तोमर ने भारतीय प्रेस परिषद की रूपरेखा व उद्देश्य पर बोलते हुए कहा कि यह एक आत्म-नियामक तंत्र है। उसका स्वरूप ऐसा बनाया गया है जिससे कोई बाहरी और आंतरिक दबाव काम न कर सकें। महात्मा गांधी चाहते थे कि



प्रेस लोकरुचि के स्तर को ऊंचा उठाये। भारतीय प्रेस परिषद का भी यही उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में जनसंचार माध्यमों के पाठक, दर्शक व नागरिकों की सक्रियता की भी बड़ी आवश्यकता है

प्रसार-माध्यमे जनशिक्षणाचे प्रभावी साधन : जयंत सिंह तोमर

वर्धा, ५ ऑगस्ट २०२५ – "प्रेस हे जनशिक्षणासोबतच जनमत निर्माणाचे प्रभावी साधन आहे. म्हणूनच भारतात पत्रकारितेची सुरुवात झाल्यापासून तिला नियंत्रित करण्याचे प्रयत्न सुरू झाले. यामागे एक दीर्घ इतिहास आहे. भारताच्या स्वातंत्र्य आंदोलनात प्रसार माध्यमांनी अत्यंत मोलाची भूमिका बजावली. वेळोवेळी जे कठोर कायदे आणले गेले, त्यामुळे अनेक वृत्तपत्रांचे संपादक आणि संचालक यांना आयुष्यात अनेक अडचणींचा सामना करावा लागला." असे मत जयंत सिंह तोमर यांनी व्यक्त केले.

ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय येथील विधी विभागात विद्यार्थ्यांसाठी आयोजिलेल्या व्याख्यानमालेत बोलत होते. दोन दिवस चाललेल्या या व्याख्यानमालेत 'भारतामधील प्रेससंबंधी कायदे' आणि 'भारतीय प्रेस परिषद' या विषयांवर सखोल चर्चा करण्यात आली. या वेळी विश्वविद्यालयाच्या विधी विभागाचे अधिष्ठाता प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, ज्येष्ठ अध्यापक आनंद भारती, अध्यापिका डॉ. दिव्या शुक्ला, डॉ. परमानंद राठोड, डॉ. अभिषेक सिंह, पूर्वा जैन, शताक्षी दीक्षित, शील खांडेकर आणि पूजा फूलबांधे यांची उपस्थिति होती.

जयंत सिंह तोमर यांनी भारतीय प्रेस परिषदेच्या रचना व उद्दिष्टांवर भाष्य करताना सांगितले की ती एक स्वयं-नियामक संस्था आहे. तिचे स्वरूप असे बनवण्यात आले आहे की कोणताही बाह्य किंवा अंतर्गत दबाव त्याच्यावर प्रभाव टाकू शकणार नाही. महात्मा गांधींची अपेक्षा होती की प्रसार-माध्यम लोकांच्या अभिरुचीचे स्तर उंचावे. भारतीय प्रेस परिषदेचे देखील हेच उद्दिष्ट आहे. हे उद्दिष्ट साध्य करण्यात जनसंचार माध्यमांचे वाचक, प्रेक्षक आणि सामान्य नागरिक यांची सक्रिय भूमिका अत्यंत आवश्यक आहे असेही ते म्हणाले.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305